International Journal of Research in Social Sciences
Vol.15 Issue 9, September 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081**UGC Approved Journal Number: 48887**
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-
Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

श्रीमती जशोदा कंवर

शोधार्थी विशेष शिक्षा विभाग महात्मा ज्योति राव फुले विश्वविद्यालय जयपुर

नेत्रहीन व सामान्य बालकों के आत्मविश्वास और समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन–

सारांश–

इस शोध का मुख्य उद्देश्य नेत्रहीन तथा सामान्य बालकों के आत्मविश्वास एवं समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना हैं। आत्मविश्वास किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास तथा सामाजिक सहभागिता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, वहीं समायोजन क्षमता जीवन की विविध परिस्थितियों में संतुलन स्थापित करने का आधार हैं । नेत्रहीन बालकों को दृष्टि की कमी के कारण अनेक शैक्षिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता हैं जबकि सामान्य बालक अपेक्षाकृत अनुकूल परिस्थितियों में अपना विकास करते हैं।

शोध में चयनित नमूना में माध्यमिक स्तर के नेत्रहीन एवं सामान्य बालकों को शामिल किया गया। उनके आत्मविश्वास को मापने के लिए मानकीकृत आत्मविश्वास मापनी तथा समायोजन का आकलन करने हेतु समायोजन प्रश्नावली का उपयोग किया गया। आँकड़ो का विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीकों के माध्यम से किया गया।

परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि सामान्य बालकों का आत्मविश्वास और समायोजन स्तर नेत्रहीन बालकों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक हैं। तथापि नेत्रहीन बालकों ने भी अनेक क्षेत्रों में सकारात्मक दृष्टिकोण तथा उच्च आत्मबल प्रदर्शित किया। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला गया कि उचित शैक्षिक संसाधन पारिवारिक सहयोग और सामाजिक संवेदनशीलता के माध्यम से नेत्रहीन बालकों के आत्मविश्वास एंव समायोजन क्षमता को और अधिक सशक्त बनाया जा सकता है।

प्रस्तावना –

ईश्वर ने मनुष्य को धरती पर जन्म दिया। कि वह अपनी इन्द्रियों के द्वारा संसार को देख व महसूस कर सके, कि ईश्वर ने प्रकृति को कितना सुन्दर बनाया है। और मनुष्य अपने ज्ञान रूपी चक्षुओं के द्वारा शिक्षा ग्रहण कर प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का निर्माण स्वयं करता है। क्योंकि जिस प्रकार सामान्य बालक अपने प्रत्येक कार्य करने

की क्षमता व योग्यता, आत्मनिर्भरता व आत्मविश्वास के साथकार्य को अन्जाम देता है। तथा वह मानसिक, शैक्षणिक व भावनात्मक रूप से सोच विचार कर निर्णय लेना ही उचित माना जाता है। तथा सामान्य बालक किसी भी वातावरण का उसके अनुसार स्वयं को बदलता है। इसे ही समायोजन कहा जाता है।

ठीक इसी प्रकार नेत्रहीन विद्यार्थी भी आत्मनिर्भर बनना और उसका स्वयं पर कितना विश्वास हैं कहने का तात्पर्य यह है कि विशेष विद्यार्थी नेत्रहीन होने के बावजूद भी वह भी सभी कार्य अच्छे से कर सकता है। लेकिन उसका इन बालकों का आत्मविश्वास सामान्य बालकों की अपेक्षा कम पाया गया है। और नेत्रहीन विद्यार्थी का समायोजन के लिए उसे पारिवारिक सहयोग, सामाजिक गतिविधियों परिस्थितियों उस बालक के साथ समाज की भागीदार भी आवश्यक है। जिससे विशेष बालक भी वातावरण के अनुकूल ढल सकें तथा प्रत्येक कार्य को पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य करने में सक्षम हो सकें। नेत्रहीन बालकों को शिक्षा के क्षेत्र में तथा समाज में रहते हुए उसके सामने कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जबकि सामान्य बालक की सामाजिक और शैक्षिक अवसरों का लाभ अच्छे से उठा सकते है। इस अध्ययन का उद्देश्य इन दोनों वर्गों के आत्मविश्वास व समायोजन स्तर का तुलनात्मक विश्लेषण करना है।

शोध की आवश्यकता

- नेत्रहीन बालकों के आत्मविश्वास और समायोजन की वास्तविक स्थिति का पता करना चाहिए।
- नेत्रहीन व सामान्य बालकों को समावेशी शिक्षा व विशेष शिक्षा कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
- समाज एवं शिक्षकों को इन बालकों के मनोवैज्ञानिक व सामाजिक पक्षों की समझ को विकसित करना।
- नीति–निर्माताओं को समुचित सहायता और संसाधन उपकरणों को उपलब्ध कराना चाहिए जिससे तथ्यात्मक आधार प्रदान किया जा सकें।

उद्देश्य

- नेत्रहीन व सामान्य बालकों के आत्मविश्वास स्तर की तुलना करना।

- नेत्रहीन व सामान्य बालकों के समायोजन स्तर की तुलना करना।

परिकल्पनाएं

- नेत्रहीन और सामान्य बालकों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर होगा।
- नेत्रहीन और सामान्य बालकों के समायोजन में सार्थक अन्तर होगा।

साहित्य समीक्षा :–

- कुमार व सिंह (2020) के अध्ययन में बताया गया कि दृष्टि बाधित बालकों का आत्मविश्वास ज्यादा पाया गया। जबकि दूसरे विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों का समायोजन तुलनात्मक रूप से कमजोर पाया गया है।
- .शर्मा आर. (2014) ने अपने शब्दों में बताया कि नेत्रहीन बालकों के पारिवारिक सहयोग और सामाजिक समायोजन मे विद्यालय वातावरण के अनुसार ढलना अहम भूमिका होती है।
- रोसेन बर्ग एम. (1965) के अध्ययन के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के आत्म–सम्मान को सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास मुख्य पहलू बताया गया कि व्यक्ति के आत्मविश्वास का सकारात्मक संबंध में विद्यमान लोगों के सहयोग

  व मदद से है।
- मारश, एच. डब्ल्यू. (1990) के अध्ययन के अनुसार बताया गया है कि आत्म

  धारणा और शैक्षणिक सफलता के बीच गहरा संबंध होता है।
- पटेल एस (2018) ने बताया कि साथ में पढ़ने वाले मित्रों व गुरू का व्यवहार नेत्रहीन बालकों के आत्मविश्वास को प्रभावित करता है।

शोध पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। वर्तमान अध्ययन में प्रयुक्त शोध डिजाईन, जनसंख्या नमूनाकरण विधियों, आंकड़ा प्रक्रियाओं की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन नेत्रहीन व सामान्य बालकों के आत्मविश्वास व समायोजन के

तुलनात्मक व वर्णनात्मक अध्ययन सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया। दोनों समूहों की अलग–अलग बालकों में अपने आत्मविश्वास करने के प्रति लिये गये निर्णयों की क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। नेत्रहीन व सामान्य बालकों में समायोजन वातावरण के अनुकूल स्वयं में बदलाव करना ही समायोजन है। नेत्रहीन व सामान्य बालकों के जीवन में कई ऐसी चुनौतियों उनके सामने वर्तमान व भविष्य में आती जाती रहती है। लेकिन इस तरह की समस्याओं का समाधान किस तरह से करना है। इसका तुलनात्मक व वर्णनात्क सहसम्बन्धी डिजाईन का उपयोग किया गया है।

अनुसंधान डिजाईन

- वर्तमान शोध डिजाईन एक क्षेत्र प्रयोग अनुसंधान डिजाईन है जिसमें नेत्रहीन व सामान्य बालकों का समायोजन व आत्मविश्वास के प्रति उनकी स्थिति स्वतंत्र चर था।
- इन बालकों का आत्मविश्वास व समायोजन स्तर आश्रित चर था।
- नेत्रहीन व सामान्य बालकों का इन दोनों समूहों का अध्ययन तुलनात्मक रूप से अध्ययन किया गया।
- इसमें नेत्रहीन व सामान्य बालकों के मात्रात्मक व विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया गया।

नमूना

- इसमें सामान्य बालकों की संख्या 75 रखी गयी तथा नेत्रहीन बालकों की संख्या 75 रखी गयी।
- दोनों समूहों के बालकों की संख्या सामान्य 75 व नेत्रहीन 75 कुल 150 होगी।
- इसमें नेत्रहीन व सामान्य बालकों की कक्षा 9 से 12 होगी।
- इसमें जोधपुर संभाग के सामान्य व विशिष्ट विद्यालयों को शामिल किया गया।
- इसमें दोनों समूहों के बालकों का चयन करते हुए यादृच्छिक चयन द्वारा प्रश्नोत्तर विधि के माध्यम से शोध अध्ययन कार्य किया गया।

परीक्षण :

डेटा संग्रहण के लिए प्रयोग किए गए परीक्षण इस प्रकार से बताया गया है।

1. आत्मविश्वास मापन प्रश्नावली

इस शोध कार्य में रेखा गुप्ता द्वारा आत्मविश्वास मापन प्रश्नावली को प्रयोग में लाया गया। इसमें बहुविकल्पीय प्रश्नों पर आधारित है। जिससे बालकों के आत्मविश्वास स्तर का मापन करना ही इसका उद्देश्य हैं नेत्रहीन व सामान्य बालकों के जीवन के प्रत्येक कार्यों में चुनौतियां आने पर स्वयं बालक किस प्रकार से इन सभी चुनौतियों का सामना कैसे करेंगे। और मापन प्रश्नावली तथा साक्षात्कार द्वारा उनके आत्मविश्वास को जांचना है। इनके मैनुअल में स्कोरिंग दी गयी। इसमें उच्च स्कोर उच्च आत्मविश्वास का संकेत देता है।

2. समायोजन मापन प्रश्नावली

समायोजन मापन प्रश्नावली मैनुअल के निर्माता डॉ. ए.के.पी. सिन्हा व डॉ. आर.पी. सिंह द्वारा इन प्रश्नावली को बनाया गया है। इनका मुख्य उद्देश्य बालकों के समायोजन स्तर का मापन करना तथा नेत्रहीन व सामान्य बालकों को सामाजिक, शैक्षणिक, भावनात्मक समायोजन के क्षेत्र में स्वयं को वातावरण के अनुकूल ढ़लना चाहिए। इसमें प्रश्नावली में 56 से अधिक कथनों पर आधारित है। जिसमें हमेशा, कभी–कभी या कभी नहीं में उत्तर देने है। तथा स्कोरिंग विधि द्वारा नकारात्मक कथनों की गणना के आधार पर समायोजन के स्तर का मापन किया गया।

3. आंकड़ा संग्रहण प्रक्रिया

नेत्रहीन व सामान्य बालकों के विशिष्ट व सामान्य विद्यालयों से शोधकर्ता ने अनुमति प्राप्त कर छात्रों का समूह में परीक्षण करवाया और उसके बारे में दिशा–निर्देश स्पष्ट रूप से दिए गए। जिससे सभी बालक इन निर्देशों को भली–भांति समझकर प्रश्नों के उत्तर अच्छे से दे पायें। मैनुअल के अनुसार स्कोरिंग विधि अंकन की गई है। बालकों को परीक्षण के उद्देश्य और विधि से अवगत कराया गया, सभी उत्तर पुस्तिकों को शान्त वातावरण में शोधकर्ता की उपस्थिति में भराई गई ताकि इसकी गोपनीयता व निष्पक्षता बनी रहे।

सांख्यकीय विश्लेषण

दोनों समूहों के बालकों के अंकों के बीच सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए MSD और माध्य (Mean)और मानक विचलन (SDT - test)परीक्षण द्वारा दोनों समूहों की तुलना तथा सहसम्बन्ध विश्लेषण द्वारा सम्बन्धों की गणना की गयी।

निष्कर्ष –

वर्तमान अध्ययन में आत्मविश्वास स्तर में सामान्य बालकों का आत्मविश्वास अधिक पाया गया। जबकि नेत्रहीन बालकों के आत्मविश्वास के स्तर में कमी पाई गई।

समायोजन स्तर में भी सामान्य बालक बेहतर रहे। जबकि नेत्रहीन बालकों के तीनो आयामों में से सामाजिक समायोजन अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। तथा आत्म विश्वास और समायोजन के बीच सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

शोध से यह स्पष्ट हुआ कि नेत्रहीन बालकों में आत्मविश्वास व समायोजन दोनों ही क्षेत्रों में कुछ कमी पाई गई। लेकिन यदि पारिवारिक वातावरण सकारात्मक सामाजिक सहयोग, समावेशी शिक्षण पद्धति और मनोवैज्ञानिक सहयोग यदि उपलब्ध कराया जाए तो वे भी समान रूप से सफल हो सकते है।

संदर्भ

1. शर्मा, आर. (2014) दृष्टिबाधित बच्चों का सामाजिक समायोजन, शैक्षिक मनोविज्ञान पत्रिका, 12(2), 45–52
2. रासेनबर्ग, एम(1965) सोसाईटी एण्ड द एडोलसेन्ट सेल्फ इमेज, प्रिन्सटोन यूनिवर्सिटी प्रेस
3. मारश एच.डब्ल्यू (1990) सेल्फ–डिस्क्रीपशन, क्यूश्चननायर, एन.एस.डब्ल्यू यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न सिन्देह
4. पटेल एस. (2018) दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर सहपाठी व्यवहार का प्रभाव, भारतीय शिक्षा समीक्षा, 66(1) 90–97
5. कुमार पी. एवं सिंह पी (2020) समावेशी शिक्षा और दृष्टिबाधित छात्रों का व्यक्तित्व विकास, शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका 8(3)112–119